मनु ने इक्ष्वाकु को प्रदान किया। इस प्रकार शिष्यपरम्परा के अनुगामी आचार्यों के द्वारा यह 'योग' मानवसमाज में चला आता रहा। कालान्तर में, उस शिष्यपरम्परा के विशृंखलित हो जाने पर यह लुप्तप्राय हो गया। अतः श्रीभगवान् इसका पुनः प्रवचन कर रहे हैं और इस बार उनका श्रोता है, कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि में स्थित हुआ अर्जुन।

श्रीभगवान् अर्जुन से कहते हैं कि वे इस परम रहस्य को उसे इसीलिए सुना रहे हैं, क्योंकि वह उनका प्रिय भक्त एवं सखा है। तात्पर्य यह है कि भगवद्गीता रूपी दर्शन विशेष रूप से भगवद्भक्त के लिए कहा गया है। साधकों की ज्ञानी, योगी तथा भक्त —ये तीन कोटियाँ हैं। यहाँ श्रीभगवान् ने अर्जुन से कहा है कि गीता की पुरातन परम्परा विशृंखलित हो गयी है, अतएव वे उसे नूतन परम्परा का प्रथम श्रोता बना रहे हैं। इस प्रकार श्रीभगवान् ऐसी नवीन परम्परा को स्थापित करना चाहते हैं, जो सूर्यदेव से चली आ रही विचारधारा की अनुगामिनी हो। उनकी इच्छा है कि अर्जुन उनकी शिक्षा का पुनः प्रसार-प्रचार करे, अर्थात् भगवद्गीता-ज्ञान का अधिकृत आचार्य बन जाय। अस्तु, हम देखते हैं कि भगवद्गीता का उपदेश विशेष रूप से अर्जुन के लिए किया गया है, क्योंकि वह श्रीकृष्ण का परम भक्त, आज्ञाकारी शिष्य तथा अन्तरंग सखा है। प्रत्यक्ष रूप से सिद्ध होता है कि वही मनुष्य गीता को उत्तम प्रकार से हृदयंगम कर सकता है, जो अर्जुन के समान गुणों से युक्त हो, अर्थात् भगवद्भक्त हो और जिसका श्रीभगवान् से सीधा सम्बन्ध भी हो। भक्ति का उदय होते ही श्रीभगवान् से मनुष्य का सीधा सम्बन्ध अपने-आप स्थापित हो जाता है। यह अति विशद तत्त्व है, किन्तु संक्षेप में यह कहा जा सकता है कि भक्त और भगवान् में पाँच रसों में से किसी एक में सम्बन्ध रहता है। ये पाँच रस हैं—शान्त, दास्य, सख्य, वात्सल्य तथा माधुर्य।

अर्जुन और श्रीभगवान् में सखाभाव है। अवश्य ही, इस सख्यभाव और सांसारिक मित्रता में आकाश-पाताल का अन्तर है। यह एक ऐसी दिव्य मित्रता है. जिसकी प्राप्ति सब को नहीं हो सकती। यह सत्य है कि प्रत्येक जीव का श्रीभगवान् से एक विशिष्ट सम्बन्ध है, जो भक्ति की संसिद्धि होने पर जागृत हो जाता है। परन्तु साथ ही, यह भी सत्य है कि जीवन की वर्तमान अवस्था में श्रीभगवान् की ही नहीं, वरन् उनसे अपने नित्य सम्बन्ध की भी हमें विस्मृति हो गई है। कोटि-कोटि जीवों में से प्रत्येक जीव का श्रीभगवान् से नित्य विशिष्ट सम्बन्ध है। इसे 'स्वरूप' कहा जाता है। भक्तियोग के द्वारा इस स्वरूप को पुनः जागृत किया जा सकता है। यही अवस्था 'स्वरूपसिद्धि' कहलाती है। अस्तु, अर्जुन भक्त है और सख्यभाव में श्रीभगवान् से उसका नित्य सम्बन्ध भी है।

अर्जुन ने भगवद्गीता को किस प्रकार धारण किया, यह ध्यान देने योग्य है। इसका उल्लेख दसवें अध्याय में है:

अर्जुन उवाच।
परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्।
पुरुषं शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम्।।